BA III year A333

I UNIT

सामाजिक शोध का अर्थ एवं प्रकृति :-

सामाजिक अनुसंधान का परिचय :-

अनुसंधान (शोध) शब्द अंग्रेजी के Research का हिन्दी रूपान्तर है। जो कि दो भागों में RE व SEARCH में विभाजित है।

RE अर्थ पुनः
SEARCH अर्थ खोज करना.
अतः अनुसंधान (शोध) का शाब्दिक अर्थ पुनः खोज करना है।

नोट :→ शोध का प्रयोजन वैज्ञानिक पद्धति द्वारा प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करना है।
इस प्रकार सामाजिक घटनाओं को समझने, उनके सत्यापन, एवं परिमार्जन तथा सैद्धान्तिक विश्लेषण के लिए व्यवस्थित वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग ही सामाजिक अनुसंधान है।

सामाजिक अनुसंधान की परिभाषाएं :-

△ पी० वी० यंग :- "सामाजिक अनुसंधान नवीन तथ्यों की खोज, पुराने तथ्यों का सत्यापन, उनके क्रमबद्ध पारस्परिक सम्बन्धों, कारणों की व्याख्या तथा उन्हें संचालित करने वाले प्राकृतिक नियमों का अध्ययन की सुनियोजित पद्धति है।"

△ रेडमैन व मोरी :→ " नवीन ज्ञान को प्राप्त करने के क्रमबद्ध प्रयास को अनुसंधान कहते हैं "

Scanned with CamScanner

A 333

बोगार्डस :- "एक साथ रहने वाले लोगों के जीवन में क्रियाशील अन्तर्निहित प्रक्रियाओं की खोज ही सामाजिक अनुसंधान है।"

सामाजिक अनुसंधान की प्रकृति :-

1. सा० सम्बन्धों, घटनाओं, तथ्यों व प्रक्रियाओं की व्याख्या करना,
2. नवीन तथ्यों की खोज करना,
3. समस्याओं की प्रकृति व कारणों का अध्ययन करना,
4. वैज्ञानिक पद्धति का प्रयोग,
5. पुराने तथ्यों का पुनः परीक्षण व सुधार करना,
6. सांख्यिकीय पद्धति का प्रयोग।

सामाजिक अनुसंधान का उद्देश्य :-

नोट :- किसी भी अनुसंधान का मौलिक उद्देश्य ज्ञान की वृद्धि है।

उद्देश्यों को दो भागों में विभाजित किया है।-

1. सैद्धान्तिक उद्देश्य :-
2. व्यावहारिक उद्देश्य।

पुनः सैद्धान्तिक व व्यावहारिक उद्देश्यों को 4 उपविभागों में बाँटा गया है।

सामाजिक अनुसंधान की विशेषताएँ :-

i यह तार्किक व क्रमबद्ध पद्धतियों पर आधारित है।
ii यह मानव की आकांक्षाओं, प्रवृत्तियों, व्यवहार की खोज करता है।

Scanned with CamScanner

A333

iii विभिन्न तथ्यों के मध्य सम्बन्धों का अन्वेषण करता है।
iv अनुमानित भविष्यवाणी करने में सहायक.
v भौतिक घटनाओं की भाँति सा० घटनाएँ भी निश्चित नियमों द्वारा संचालित होती हैं यह भी इसकी विशेषता है।

सामाजिक अनुसंधान का महत्व :-

1 ज्ञान के विकास में सहायक,
2. अज्ञानता व अंधविश्वास को मिटाने में सहायक,
3. समाज के वैज्ञानिक अध्ययन में सहायक,
4. सा० कल्याण में सहायक,
5 सा० नियन्त्रण में सहायक,
6 भविष्यवाणी करने में सहायक।

वैज्ञानिक पद्धति (विधि)

वैज्ञानिक पद्धति द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान ही विज्ञान है। वैज्ञानिक पद्धति से के केवल तथ्यों का अध्ययन करके ज्ञान ही नहीं प्राप्त किया जाता बल्कि उन्हें इस प्रकार क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित किया जाता है जिससे परिणाम स्वयं ही स्पष्ट हो सकें।

A चर्चमैन व एकोफ के अनुसार :- "विज्ञान का अर्थ ज्ञान प्राप्त करने का व्यवस्थित तरीका या कुशल खोज है।"

Scanned with CamScanner

A333

वैज्ञानिक पद्धति की परिभाषाएं :-

- कार्ल पियरसन :- "समस्त विज्ञानों की एकता के उनकी पद्धति में है न कि उनकी विषय सामग्री में।"

- गुडे व हैट :- "विज्ञान समस्त अनुभवसिद्ध संसार के प्रति दृष्टिकोण की एक पद्धति है।"

- लुण्डबर्ग :- "विस्तृत अर्थ में वैज्ञानिक पद्धति व्यवस्थित अवलोकन, वर्गीकरण व निर्वचन है।"

वैज्ञानिक पद्धति के चरण :-

i समस्या का चुनाव,
ii उपकल्पना का निर्माण,
3. चरों का चयन,
4. निदर्शन,
5 सामग्री का संकलन,
6. सामग्री का विश्लेषण,
7. प्रतिवेदन या रिपोर्ट तैयार करना।

वैज्ञानिक पद्धति की विशेषताएं :-

i प्रमाणिकता,
2. वस्तुनिष्ठता,
3 निश्चयात्मकता,
4. सामान्यता
5 क्रमबद्धता

Scanned with CamScanner

A333

6. कार्य कारण सम्बन्ध,
7 पूर्वानुमान
8. सिद्धान्त सार्वभौमिक,
9. भविष्यवाणी की क्षमता,
10 तर्क की प्रधानता.

Scanned with CamScanner

वस्तुनिष्ठता या उद्देश्यपरकता (Objectivity)

सामाजिक अनुसन्धान का उद्देश्य किसी घटना का वैज्ञानिक विधि द्वारा अध्ययन तथा उसे वास्तविक रूप में समझने से है और यह उद्देश्य तभी सम्भव है जब अनुसन्धानकर्ता किसी घटना के अध्ययन को अपने विचारों से प्रभावित न करे। जब विभिन्न अनुसन्धानकर्ता एक घटना का अध्ययन कर एक सामान्य निष्कर्ष निकालते हैं तो हम उसे वस्तुनिष्ठ अध्ययन कह सकते हैं इसीलिए इसको परिभाषित करते हुए AW ग्रीन ने कहा है कि "निष्पक्षता के साथ घटना का परीक्षण ही वस्तुनिष्ठता है" इसी तरह लावेलकार ने कहा है सत्य की वस्तुनिष्ठता का अर्थ यह है कि घटनामयी संसार किसी व्यक्ति के विश्वासों व आशाओं अथवा भय से स्वतन्त्र एक वास्तविकता है जिसका ज्ञान हम कल्पना से नहीं बल्कि अवलोकन द्वारा करते हैं।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि वस्तुनिष्ठता घटना का स्वतन्त्र व निष्पक्ष रूप से अध्ययन करने की क्षमता या भावना है जो अनुसन्धानकर्ता को अध्ययन करते समय उसके अपने विश्वासों, आशाओं व भय से दूर रखता है, साथ ही साथ परीक्षण, निरीक्षण व वर्गीकरण पर बल देता है।

कार के अनुसार, "सत्य की वस्तुनिष्ठता से अभिप्राय है कि दृष्टि विषयक जगत किसी व्यक्ति के प्रयासों, आशाओं या भय से स्वतन्त्र एक वास्तविकता है जिसे हम सहज ज्ञान एवं कल्पना से नहीं बल्कि वास्तविकता अवलोकन के द्वारा प्राप्त करते हैं"

फेयरचाइल्ड के अनुसार, "वस्तुनिष्ठता का अर्थ तथ्यों को पक्षपात तथा उद्देश्य के आधार पर नहीं, बल्कि प्रमाण एवं तर्क के आधार पर बिना किसी सुझाव या पूर्व-घटनाओं के, सही पृष्ठभूमि में देखने की योग्यता है।"

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि संसार एक वास्तविकता है तथा घटनाएँ किन्हीं सामान्य नियमों द्वारा संचालित होती हैं कार का मत है कि वस्तुनिष्ठता तथ्यों का यथार्थ अवलोकन है जिसमें व्यक्ति के विश्वासों, आशाओं भय एवं कल्पनाओं आदि का कोई स्थान नहीं है। ग्रीन का कहना है कि वस्तुनिष्ठता सामग्री संग्रह करने का साधन नहीं है बल्कि यह शोधकर्ता की भावना एवं क्षमता है। जिसके द्वारा वह घटनाओं का उसी क्रम में वर्णन करने का प्रयत्न करता है जैसा कि उसकी इन्द्रियाँ अवलोकन करती हैं।

Scanned with CamScanner

वस्तुनिष्ठता से सम्बन्धित समस्याएँ

निष्पक्षता व प्रमाण से प्राप्त निष्कर्ष ही वस्तुनिष्ठता कहलाते हैं परन्तु प्रश्न यह उठता है कि समाजशास्त्र अमूर्त या जटिल घटनाओं या समस्याओं का अध्ययन करता है। सामाजिक घटनाओं की प्रकृति के कारण सामाजिक विज्ञानों में वस्तुनिष्ठता रख पाना एक कठिन कार्य है। इसलिए वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने में निम्नलिखित समस्याएँ आती हैं

(i) समस्या के चयन में मूल्यों द्वारा प्रभावित होना
(ii) अध्ययन में तटस्थता का अभाव
(iii) बाह्य हितों द्वारा बाधा
(iv) सामाजिक घटनाओं की प्रकृति अमूर्त व जटिल
(v) किसी एक कारक पर अधिक बल
(vi) अनुसन्धानकर्ता सामान्य ज्ञान तथा वास्तविक ज्ञान के भ्रम में स्वयं को उलझा लेता है।
(vii) शीघ्र निर्णय की आवश्यकता

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि मानव द्वारा मानव का अध्ययन पूरी तरह वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकता। इस बात का समर्थन मैक्स वेबर जैसे समाजशास्त्रियों द्वारा भी किया गया है।

वस्तुनिष्ठता को बनाए रखने के उपाय

मैक्स वेबर कहते हैं कि वस्तुनिष्ठता प्राप्त करना एक कठिन कार्य है तो वहीं दुर्खीम कहते हैं कि सामाजिक अनुसन्धानकर्ता समाज का वस्तुनिष्ठ अध्ययन कर सकता है और इन्होंने आत्महत्या, श्रम-विभाजन एवं धर्म की समाज में उपयोगिता के आधार पर अनुसन्धान किया भी है। इसीलिए वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने में कुछ सावधानियाँ रखनी पड़ती हैं, जो निम्नलिखित हैं

(i) प्रयोगसिद्ध पद्धतियों का उपयोग
(ii) स्पष्ट शब्दों एवं अवधारणाओं का प्रयोग
(iii) दैव-निदर्शन का उपयोग अत्यधिक
(iv) एक से अधिक पद्धतियों का प्रयोग
(v) सामूहिक शोध पद्धतियों का प्रयोग
(vi) यान्त्रिक उपकरणों का उपयोग

उपरोक्त विवेचना के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि मानव के अपने स्वभाव के कारण वस्तुनिष्ठ विवेचन में अनेक दोष पाए जाते हैं परन्तु इन सामान्य दोषों के अतिरिक्त वस्तुनिष्ठ अध्ययन में और अधिक दोष नहीं पाए जाते। अनुसन्धानकर्ता अपने विषय के प्रति सचेत व तटस्थ रहें तो समाजशास्त्र को निष्पक्ष अध्ययन के माध्यम से विज्ञान बनाया जा सकता है जो वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी उपयोगी हो सकता है।

वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने के उपाय या साधन

(i) प्रयोगसिद्ध पद्धतियाँ
(ii) सांख्यिकी मापन
(iii) पारिभाषिक शब्दों एवं धारणाओं का प्रमाणीकरण
(iv) यान्त्रिक साधनों का प्रयोग
(v) दैव-निदर्शन का प्रयोग
(vi) प्रश्नावली और अनुसूची का प्रयोग
(vii) सामूहिक अनुसन्धान

व्यक्तिनिष्ठता या वैयक्तिकता
(Subjectivity)

मनुष्य द्वारा सामाजिक विज्ञानों में घटनाओं एवं समस्याओं का वस्तुनिष्ठ अध्ययन करने का प्रयत्न किया जाता है। फिर भी वैज्ञानिक अध्ययन में पूर्ण वस्तुनिष्ठता नहीं आ पाती। किसी अनुसन्धानकर्ता द्वारा सामग्री एकत्र करते समय अपने दृष्टिकोण से देखकर घटनाओं का वर्णन अपने अनुसार करना ही व्यक्तिनिष्ठता है।

वैयक्तिकता उस स्थिति या दशा को कहते हैं जब अवलोकन वैयक्तिक एवं पक्षपातयुक्त होता है। इसका तात्पर्य यह होता है कि सामाजिक घटनाएँ आत्मनिष्ठ प्रकृति की होती हैं। सामाजिक विज्ञानों में मनुष्य के परस्पर व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। यह व्यवहार अधिकांशत: आत्मनिष्ठ या व्यक्तिनिष्ठ होता है जैसे सामाजिक घटनाओं के अध्ययन करने हेतु अनुसन्धानकर्ता को सामाजिक संगठन, सामाजिक प्रक्रियाओं एवं सामाजिक सम्बन्धों के सन्दर्भ में ज्ञान प्राप्त करना होता है। अनुसन्धानकर्ता को उनके बाह्य एवं आन्तरिक दोनों पक्षों का विश्लेषण करना होता है। व्यवहार के आन्तरिक पक्ष को समझना अत्यन्त कठिन कार्य है इसलिए अध्ययन से अपने आपको पूर्णत: अलग रखना तथा वस्तुनिष्ठता बनाए रखना अत्यन्त कठिन होता है।

अत: यह कहा जा सकता है कि वस्तुनिष्ठता एवं व्यक्तिनिष्ठता दोनों साथ-साथ चलते हैं। वस्तुनिष्ठता जहाँ विज्ञान के पक्ष का पोषण करती है। वहीं व्यक्तिनिष्ठता मूल्यों का। अर्थात् तर्क एवं मूल्य दोनों साथ-साथ चलते हैं। अत: स्पष्ट है कि सामाजिक घटनाओं में व्यक्तिनिष्ठता का आना एक स्वाभाविक गुण है

सामाजिक अध्ययन में व्यक्तिनिष्ठता का स्रोत

सामाजिक विज्ञानों में वैयक्तिकता के आने के लिए केवल अनुसन्धानकर्ता ही उत्तरदायी नहीं है बल्कि अन्य प्रकार की अभिमति एवं पक्षपातों के कारण भी आत्मनिष्ठा आ जाने की सम्भावना रहती है। अभिमत का तात्पर्य यह है कि घटना को उसके वास्तविक स्वरूप में प्रस्तुत न करके अपने व्यक्तिगत मनोभावों एवं विचारों तथा दृष्टिकोणों को प्रस्तुत कर देने से वास्तविक स्वरूप छिप जाता है तथा व्यक्तिगत भावनाओं से युक्त मिथ्या स्वरूप उभार दिया जाता है। इस प्रकार वैज्ञानिक अध्ययन में व्यक्तिनिष्ठता आने के निम्नलिखित कारण हैं

(i) शोधकर्ता का व्यक्तिगत मत
(ii) सूचनाओं की अभिमति
(iii) न्यायदर्श में पक्षपात
(iv) तथ्य प्रस्तुतीकरण की दोषपूर्ण प्रक्रिया
(v) दोषपूर्ण प्रश्नावलियाँ
(vi) वातावरण का प्रभाव

उपरोक्त कारणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन में किस प्रकार से वैषयिकता बनाए रखी जा सकती है तथा किन कारणों से वैयक्तिकता उत्पन्न हो जाती है। वैयक्तिकता को उत्पन्न करने के कौन-से कारण हैं। सामाजिक घटनाओं के विशुद्ध अध्यंयन हेतु वस्तुनिष्ठता बनाए रखकर ही समाज को नई दिशा प्रदान की जा सकती है किन्तु मानव अपनी कमजोरियों से अपने आपको रोक नहीं पाता है जिससे वस्तुनिष्ठता का ह्रास हो जाता है।

Scanned with CamScanner

तथ्य (Statements)

अवधारणा की भाँति तथ्य भी सामाजिक अनुसन्धान में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। सामाजिक अनुसन्धान की सफलता तथ्यों पर ही निर्भर करती है इसीलिए इसको परिभाषित करते हुए **श्रीमती पीवी यंग** ने कहा है कि "तथ्य एक ऐसा शब्द है जिसकी परिभाषा करना कठिन है। यह केवल मूर्त चीजों तक ही सीमित नहीं है बल्कि अमूर्त चीज; जैसे—विचार, अनुभव एवं भावनाएँ भी तथ्य की श्रेणी में आती हैं, इसी तरह **गुडे तथा हैट** ने कहा कि "तथ्य एक अनुभवसिद्ध सत्यापन हेतु अवलोकन है।

तथ्य समस्त विज्ञानों का मूलाधार है, तथ्य वह घटना है जिसको हम वास्तविक रूप में देख या सुन सकते हैं। तथ्यों का अनुभव इन्द्रियों के माध्यम से किया जा सकता है। **दुर्खीम** जैसे समाजशास्त्री का कहना है कि समाजशास्त्र तथ्यों का अध्ययन करने वाला विज्ञान है और इन्होंने तथ्य की तीन विशेषताएँ बताई हैं—बाह्यता, बाध्यता व सामान्यता।

तथ्य की परिभाषाएँ

- **गोल्डनर** के अनुसार, "किसी भी वैज्ञानिक प्रयास का सामान्य उद्देश्य संसार के किसी पक्ष से सम्बन्धित हमारे ज्ञान में विस्तार करना होता है"।
- **फेयरचाइल्ड** के अनुसार, "तथ्य किसी प्रदर्शित की गई या प्रकाशित की जा सकने योग्य वास्तविकता का मद, पद या विषय है .... यह एक घटना है जिसके निरीक्षणों एवं मापों के विषय में बहुत अधिक सहमति पाई जाती है।"
- **थॉमस** तथा **जनैनिकी** के अनुसार, "तथ्य स्वयं में एक अमूर्तिकरण ही है।"

तथ्य की विशेषताएँ

1. तथ्य एक ऐसी घटना है जो वास्तविक रूप में घटित होती है।
2. तथ्य मूर्त व अमूर्त दोनों प्रकार का हो सकता है।
3. तथ्य एक ऐसी घटना है जिसका निरीक्षण, परीक्षण, अवलोकन एवं अनुभव सम्भव होता है।
4. तथ्य एक ऐसी घटना है जिसके बारे में सभी का मत समान होता है।
5. तथ्य किसी घटना या प्रक्रिया की पूर्ण व्याख्या नहीं करता बल्कि विभिन्न तथ्य मिलकर किसी घटना या प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं।
6. घटना की प्रक्रिया जितनी जटिल होगी उसकी व्याख्या के लिए तथ्यों की शृंखला भी अधिक होगी।

तथ्यों के प्रकार

तथ्य को निम्नलिखित दो आधारों पर विभाजित किया जा सकता है

- **तथ्यों की प्रकृति के आधार पर** तथ्यों को दो वर्गों में बाँटा गया है
  (i) गुणात्मक तथ्य (ii) परिमाणात्मक तथ्य
- **मौलिकता के आधार पर तथ्यों का विभाजन** इसके आधार पर भी तथ्यों को दो भागों में विभाजित किया गया है।
  (i) प्राथमिक तथ्य (ii) द्वितीयक अथवा प्रलेखनीय स्रोत

सामाजिक अनुसन्धान तथ्यों के संकलन पर आधारित होता है। तथ्यों के अभाव में सामाजिक अनुसन्धान की प्रक्रिया चल ही नहीं सकती। अतः सर्वेक्षणकर्ता अध्ययन की सरलता के लिए सभी प्रकार की सामग्री को दो प्रमुख भागों में विभाजित करता है

(i) प्राथमिक सामग्री (ii) द्वितीयक सामग्री

- स्वभाव या प्रकृति के आधार पर सूचनाएँ दो प्रकार की होती हैं
  (i) गुणात्मक
  (ii) परिमाणात्मक
- प्राथमिक सामग्री संकलन के दो प्रमुख तरीके हैं
  (i) प्रत्यक्ष स्रोत (ii) अप्रत्यक्ष स्रोत

प्रत्यक्ष स्रोत के अन्तर्गत—अवलोकन, अनुसूची एवं साक्षात्कार को सम्मिलित किया जाता है।

जबकि अप्रत्यक्ष स्रोत के अन्तर्गत—प्रश्नावली, मत-पत्र, टेलीफोन द्वारा साक्षात्कार तथा रेडियो अपील को सम्मिलित किया जाता है।

प्राथमिक सामग्री अथवा प्राथमिक स्रोतों के गुण

इसके गुण निम्नलिखित हैं

(i) अधिक विश्वसनीय (ii) वास्तविक चित्रण
(iii) विस्तृत जानकारी (iv) अधिक लोचपूर्ण
(v) उत्तरदाताओं पर नियन्त्रण (vi) सरल और कम खर्चीली

प्राथमिक सामग्री के दोष

इसके दोष निम्नलिखित हैं

(i) सर्वेक्षणकर्ता की अभिमत
(ii) अधिक मानव शक्ति की आवश्यकता
(iii) प्रशिक्षण का अभाव
(iv) अधिक समय एवं धन

द्वितीयक सामग्री के स्रोत

- **व्यक्तिगत प्रलेख** भी कई प्रकार के होते हैं
  (i) जीवन इतिहास (ii) डायरियाँ
  (iii) पत्र (iv) संस्मरण
- **सार्वजनिक प्रलेख** को दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है
  (i) **प्रकाशित प्रलेख** के अन्तर्गत—रिकॉर्ड, प्रकाशित आँकड़े, सार्वजनिक संगठन की रिपोर्ट, अन्य।
  (ii) **अप्रकाशित प्रलेख** के अन्तर्गत—गोपनीय रिकॉर्ड, दुर्लभ हस्तलेख, विभिन्न अभिलेख, इत्यादि।

द्वितीयक स्रोतों के गुण या महत्त्व

(i) पक्षपात से स्वतन्त्र (ii) भूतकालीन तथ्यों का संग्रह
(iii) गोपनीय सूचनाओं का ज्ञान (iv) समय, धन, परिश्रम की बचत

द्वितीयक स्रोतों के दोष

(i) केवल सामान्य विवरण (ii) पुनर्परीक्षा कठिन
(iii) झूठे रिकॉर्ड (iv) विश्वसनीयता का अभाव

Scanned with CamScanner